स्वास्थ्य आपके द्वार...

अंक-2

मासिक न्यूज़लेटर | फरवरी, 2026

माननीय उप मुख्यमंत्री का प्रेरक संदेश...

प्रिय प्रदेशवासियो,

सादर नमस्कार।

स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी, व्यापक एवं गुणवत्तापरक बनाने के लिए चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश दृढ़ संकल्पित है। सतत विकास लक्ष्य-2030 के अंतर्गत स्वास्थ्य के क्षेत्र में चिन्हित लक्ष्यों को प्राप्त कर **'यूनीवर्सल हेल्थ कवरेज'** को सुनिश्चित करते हुए **'विकसित भारत-2047'** के निर्माण में प्रदेश की सशक्त भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी क्रम में चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उत्तर प्रदेश द्वारा प्रकाशित ई-मासिक पत्रिका **'स्वास्थ्य आपके द्वार'** के फरवरी माह का यह अंक **'फाइलेरिया उन्मूलन एवं कृमि मुक्ति'** जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण विषय को समर्पित है।

फाइलेरिया (हाथीपाँव) एवं पुरूषों में हाइड्रोसील जैसी गंभीर परंतु पूर्णतः रोकी जा सकने वाली बीमारी है, जो संक्रमित मच्छरों के माध्यम से फैलती है। यह रोग न केवल शारीरिक समस्याएं उत्पन्न करता है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करता है। इसी प्रकार कृमि संक्रमण (आंतों के कीड़े) बच्चों एवं किशोरों में कुपोषण, एनीमिया, शारीरिक एवं मानसिक विकास में बाधा का प्रमुख कारण बनता है।

मुझे यह बताते हुए हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि प्रदेश सरकार द्वारा माननीय मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में फाइलेरिया उन्मूलन हेतु **'सर्वजन दवा सेवन (MDA) अभियान'** दिनांक 10 से 28 फरवरी 2026 तक संचालित किया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं द्वारा घर-घर जाकर दवाओं का सेवन कराया जा रहा है, जिससे कोई भी पात्र व्यक्ति इस सुरक्षा कवच से वंचित न रहे। वहीं, 'राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस' अभियान के अंतर्गत दिनांक 10 एवं 13 फरवरी 2026 को आशा, आंगनवाड़ी, स्वास्थ्य कर्मियों एवं अध्यापकों के अथक प्रयासों से विभिन्न विद्यालयों में 1 से 19 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों एवं किशोरों को दवा का सेवन कराया गया।

मैं प्रदेशवासियो से आग्रह करता हूं कि-

- सर्वजन दवा सेवन अभियान के दौरान दी जाने वाली दवा का सेवन अवश्य करें।
- भविष्य में कृमि मुक्ति दिवस पर अपने बच्चों को निर्धारित दवा का सेवन कराएं।
- स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल एवं मच्छर नियंत्रण के उपायों को अपनाएं।

आपकी सक्रिय भागीदारी ही फाइलेरिया एवं कृमि संक्रमण मुक्त उत्तर प्रदेश के लक्ष्य को प्राप्त करने में सहायक होगी।

आइए, हम सभी मिलकर एक स्वस्थ, समर्थ और सशक्त उत्तर प्रदेश के निर्माण का संकल्प लें। आपका सहयोग ही हमारी सबसे बड़ी शक्ति है।

ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री, उ.प्र.

माननीय राज्य मंत्री (स्वास्थ्य) का मार्गदर्शी संदेश...

प्रिय प्रदेशवासियो,

सादर नमस्कार।

ई-मासिक पत्रिका **"स्वास्थ्य आपके द्वार"** के फरवरी माह के अंक, जिसकी थीम 'फाइलेरिया उन्मूलन एवं कृमि मुक्ति' है, के माध्यम से प्रदेशवासियो को संबोधित करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है।

फाइलेरिया (हाथीपांव), पुरुषों में हाइड्रोसील एवं कृमि संक्रमण ऐसी जन स्वास्थ्य समस्याएँ हैं, जो व्यक्ति के स्वास्थ्य, कार्यक्षमता एवं जीवन की गुणवत्ता पर दीर्घकालिक प्रभाव डालती हैं। इन रोगों की रोकथाम पूर्णतः संभव है, बशर्ते हम सभी जागरूकता, नियमित दवा सेवन तथा स्वच्छता के प्रति सजग रहें।

उत्तर प्रदेश सरकार, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के माध्यम से फाइलेरिया उन्मूलन हेतु 'सर्वजन दवा सेवन (MDA)' अभियान का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रही है। आशा, आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों एवं स्वास्थ्य कर्मियों के सहयोग से घर-घर जाकर लाभार्थियों को दवा का सेवन कराये जाने के साथ ही समुदाय स्तर पर जनजागरूकता गतिविधियाँ संचालित की जा रही हैं। इसी प्रकार, कृमि मुक्ति हेतु 'राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस' अभियान संचालित किया गया।

मैं प्रदेश के समस्त नागरिकों से आह्वान करता हूँ कि फाइलेरिया उन्मूलन अभियान के दौरान दी जाने वाली दवाओं का सेवन अवश्य करें तथा अपने परिवार एवं आसपास के लोगों को भी इसके लिए प्रेरित करें। साथ ही, स्वच्छता अपनाकर, स्वच्छ पेयजल का उपयोग कर एवं नियमित रूप से दवा का सेवन कराते हुए हम अपनी वर्तमान एवं भावी पीढ़ी को स्वस्थ भविष्य प्रदान कर सकते हैं।

हमारा संकल्प है कि जन भागीदारी, प्रभावी निगरानी एवं सतत जागरूकता के माध्यम से उत्तर प्रदेश को "फाइलेरिया मुक्त" एवं "कृमि संक्रमण मुक्त" बनाया जाए। यह लक्ष्य तभी संभव है जब शासन और समाज मिलकर कार्य करें।

आइए, हम सभी मिलकर स्वस्थ, सशक्त और समृद्ध उत्तर प्रदेश के निर्माण में अपना योगदान दें।

मयंकेश्वर शरण सिंह
राज्य मंत्री
संसदीय कार्य, चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य,
परिवार कल्याण तथा मातृ एवं शिशु कल्याण, उ.प्र.

हमारा साझा संकल्प :
'फाइलेरिया मुक्त उत्तर प्रदेश' एवं 'कृमि मुक्त बचपन'

अपर मुख्य सचिव की कलम से...

प्रिय साथियों,

चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उ.प्र. के अंतर्गत जन स्वास्थ्य के सुदृढ़ीकरण हेतु हम सभी निरंतर प्रतिबद्ध हैं। ई-मासिक पत्रिका 'स्वास्थ्य आपके द्वार' फरवरी माह का यह अंक 'फाइलेरिया उन्मूलन एवं कृमि मुक्ति' जैसे अत्यंत महत्वपूर्ण जन स्वास्थ्य विषय पर केंद्रित है, जो प्रदेश की वर्तमान एवं भावी पीढ़ी के स्वास्थ्य, सामर्थ्य एवं समृद्धि से सीधे संबद्ध है।

'लिम्फेटिक फाइलेरियासिस' जिसे हम सामान्य रूप से फाइलेरिया (हाथी पाँव रोग) कहते हैं, एक ऐसी उपेक्षित उष्णकटिबंधीय बीमारी है जो क्यूलेक्स मच्छरों के काटने से फैलती है। यह रोग न केवल शारीरिक विकृति उत्पन्न करता है, बल्कि प्रभावित व्यक्तियों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को भी प्रभावित करती है। भारत सरकार ने वर्ष 2027 तक फाइलेरिया उन्मूलन का संकल्प लिया है। इसी संकल्प को साकार करने के लिए प्रदेश में मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (MDA) कार्यक्रम के अंतर्गत प्रभावित जिलों में अग्रिम पंक्ति के स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं के समन्वित प्रयासों से घर-घर सम्पर्क कर डायइथाइलकार्बामेजीन (DEC), आइवरमेक्टिन एवं एल्बेंडाजोल की दवाएँ निःशुल्क खिलाई जा रही हैं।

कृमि संक्रमण (पेट के कीड़े) विशेष रूप से 1 से 19 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों में कुपोषण, रक्ताल्पता एवं मानसिक-शारीरिक विकास में बाधा का प्रमुख कारण बनता है। राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम के अंतर्गत विद्यालयों एवं आंगनवाड़ी केन्द्रों पर एल्बेंडाजोल की गोली खिलाकर बच्चों को कृमि संक्रमण से मुक्त कराया जाता है। मुझे प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश में इस कार्यक्रम में सराहनीय कार्य किया गया है।

मेरा समस्त स्वास्थ्य कर्मियों, चिकित्सा अधिकारियों एवं जनप्रतिनिधियों से आग्रह है कि फाइलेरिया उन्मूलन अभियान को एक जन आंदोलन का रूप दें। प्रत्येक पात्र व्यक्ति को दवा खिलाना सुनिश्चित करें, क्योंकि एक भी छूटा हुआ व्यक्ति संक्रमण की श्रृंखला को बनाए रख सकता है। समुदाय में जागरूकता फैलाएँ और लोगों की भ्रांतियों को दूर करें। दवा सुरक्षित है, प्रभावी है और पूरी तरह निःशुल्क है।

हमारा प्रदेश तभी स्वस्थ होगा जब हमारे बच्चे, युवा और नागरिक फाइलेरिया जैसी रोकी जा सकने वाली बीमारियों से मुक्त होंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारी समर्पित टीम इस लक्ष्य को समयबद्ध रूप से प्राप्त करेगी। स्वस्थ उत्तर प्रदेश के निर्माण में आपकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

साथ ही, आमजन से भी अपील है कि वे इन अभियानों में सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करें और अभियान के अंतर्गत दवा का सेवन कर स्वयं तथा अपने परिवार को सुरक्षित रखें।

हमारा संकल्प है- **'स्वस्थ उत्तर प्रदेश, सशक्त उत्तर प्रदेश'**।

आइए, सामूहिक प्रयासों से फाइलेरिया उन्मूलन एवं कृमि मुक्त समाज के लक्ष्य को प्राप्त करें।

आप सभी के सहयोग एवं प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक धन्यवाद।

सादर,

अमित कुमार घोष आई.ए.एस.
अपर मुख्य सचिव
चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
व चिकित्सा शिक्षा विभाग, उ.प्र.

मिशन निदेशक की कलम से...

प्रिय साथियों,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उत्तर प्रदेश' द्वारा प्रकाशित ई-मासिक पत्रिका 'स्वास्थ्य आपके द्वार' फरवरी, 2026 के इस अंक की थीम "फाइलेरिया उन्मूलन एवं कृमि मुक्ति" रखी गई है। यह विषय न केवल जन स्वास्थ्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि हमारे राज्य को रोग-मुक्त एवं स्वस्थ बनाने की दिशा में एक सशक्त संकल्प का प्रतीक भी है।

फाइलेरिया (लिम्फेटिक फाइलेरियासिस) बीमारी संक्रमित मच्छरों के माध्यम से फैलती है और दीर्घकालिक विकलांगता का कारण बन सकती है। इसी प्रकार, आंतों का कृमि संक्रमण बच्चों एवं किशोरों में कुपोषण, एनीमिया तथा शारीरिक एवं मानसिक विकास में बाधा उत्पन्न करता है। इन दोनों ही समस्याओं के समाधान हेतु व्यापक जन भागीदारी, नियमित औषधि सेवन तथा सतत जागरूकता अत्यंत आवश्यक है।

प्रदेश में "सर्वजन औषधि सेवन अभियान (MDA)" के माध्यम से करोड़ों लाभार्थियों तक दवाओं की पहुँच सुनिश्चित की जा रही है। आशा, आंगनवाड़ी कार्यकत्री, एएनएम एवं स्वास्थ्य कर्मियों के समर्पित प्रयासों से घर-घर जाकर दवा खिलाई जा रही है, जिससे संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ा जा सके। इसी प्रकार, 10 एवं 13 फरवरी को बड़ी संख्या में 1 से 19 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों एवं किशोरों को एल्बेंडाजोल की दवा का सेवन कराया गया।

मैं प्रदेशवासियों से आह्वान करती हूँ कि आप अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाएँ, दवा का सेवन अवश्य करें तथा अपने परिवार एवं समुदाय को भी इसके लिए प्रेरित करें। "सबका साथ, सबका स्वास्थ्य" की भावना के साथ ही हम फाइलेरिया उन्मूलन एवं कृमि संक्रमण से मुक्ति का लक्ष्य प्राप्त कर सकते हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि उत्तर प्रदेश में इन दोनों कार्यक्रमों के प्रति जन-जागरूकता निरंतर बढ़ रही है। हमारे फ्रंटलाइन स्वास्थ्य कर्मियों की अथक मेहनत एवं समर्पण के फलस्वरूप दवा सेवन की दर में वर्ष-दर-वर्ष सुधार हो रहा है। यह एक सामूहिक सफलता है जिसके लिए मैं प्रत्येक स्वास्थ्यकर्मी, आशा, ए.एन.एम., सामुदायिक स्वयंसेवक, आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों, अध्यापकों एवं जिला प्रशासन को हृदय से धन्यवाद देती हूँ।

आइए, हम सब मिलकर इस अभियान को जन-आंदोलन का रूप दें। 'फाइलेरिया मुक्त उत्तर प्रदेश' एवं 'कृमि मुक्त बचपन' के सपने को साकार करना हमारा साझा संकल्प है। समाज के प्रत्येक वर्ग को जागरूक करें, परिवारों को प्रेरित करें और यह सुनिश्चित करें कि कोई भी पात्र लाभार्थी इस स्वास्थ्य सुरक्षा कवच से वंचित न रहे।

हमारा लक्ष्य केवल रोग का उपचार नहीं, बल्कि उसके पूर्ण उन्मूलन की दिशा में ठोस एवं प्रभावी कदम उठाना है। आइए, हम सभी मिलकर एक स्वस्थ, सशक्त एवं समृद्ध उत्तर प्रदेश के निर्माण का संकल्प लें।

सादर,

डॉ. पिंकी जोवल आई.ए.एस.
मिशन निदेशक
राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन, उ.प्र.
व सचिव, चिकित्सा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग, उ.प्र.

फाइलेरिया उन्मूलन : चुनौती से उपलब्धि तक

उत्तर प्रदेश में फाइलेरिया उन्मूलन की दिशा में लगातार और ठोस प्रयास किए जा रहे हैं। फाइलेरिया एक गंभीर जनस्वास्थ्य समस्या है, जो व्यक्ति के शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उसके सामाजिक और आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करती है। इस रोग से होने वाली दिव्यांगता प्रभावित परिवारों पर अतिरिक्त बोझ डालती है और समाज के समग्र विकास को भी बाधित करती है। राज्य सरकार द्वारा संचालित फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक पात्र व्यक्ति तक निःशुल्क फाइलेरिया रोधी दवाएं पहुंचाकर संक्रमण की श्रृंखला को तोड़ना है। इसी क्रम में 10 फरवरी 2026 से उत्तर प्रदेश के 21 जनपदों के 64 ब्लॉकों में मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) अभियान संचालित किया गया। इस अभियान के तहत लगभग 1.40 करोड़ लक्षित आबादी को दवा सेवन के दायरे में लाने का लक्ष्य निर्धारित किया गया।

पिछले एक दशक में राज्य ने इस दिशा में उल्लेखनीय प्रगति की है। नियमित एमडीए राउंड, सुदृढ़ निगरानी तंत्र, तकनीकी नवाचार और समुदाय की सक्रिय भागीदारी के कारण प्रभावित क्षेत्रों की संख्या में लगातार कमी आई है। वर्ष 2025 में आयोजित ट्रांसमिशन असेसमेंट सर्वे (टास-1) के परिणाम इस प्रगति का स्पष्ट प्रमाण हैं। इन परिणामों में उत्तर प्रदेश ने देश में सर्वाधिक इंफेक्शन यूनिट्स को सफलतापूर्वक क्लियर कर एक महत्वपूर्ण उपलब्धि दर्ज की है। यह उपलब्धि दर्शाती है कि मजबूत योजना, प्रभावी क्रियान्वयन और जनसहभागिता के माध्यम से फाइलेरिया उन्मूलन का लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है। उत्तर प्रदेश इस दिशा में निरंतर आगे बढ़ रहा है।

कार्यान्वयन इकाइयों की स्थिति-उत्तर प्रदेश

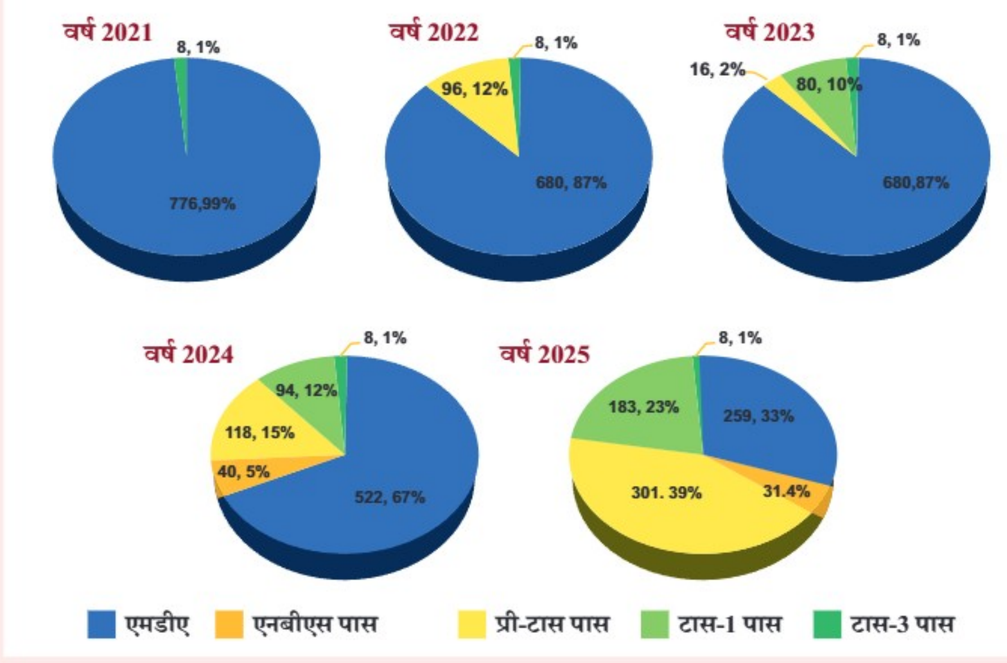

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस 2025 - उत्तर प्रदेश में 16.71 करोड़ से अधिक बच्चों को दी गई कृमिनाशक दवा

बच्चों और किशोरों में मिट्टी से फैलने वाले कृमि संक्रमण (Soil-Transmitted Helminths - STH) को नियंत्रित करने के उद्देश्य से हर वर्ष राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (National Deworming Day - NDD) के अंतर्गत कई गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में उत्तर प्रदेश में वर्ष 2025 के दौरान राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस (NDD) अभियान के तहत उल्लेखनीय सफलता प्राप्त हुई। फरवरी और अगस्त माह में आयोजित 19वें एवं 20वें चरण में कुल 16.71 करोड़ से अधिक बच्चों और किशोरों को कृमिनाशक दवा एल्बेन्डाजोल दी गई। यह अभियान राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग के नेतृत्व में शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग, पंचायती राज संस्थाओं तथा अन्य साझेदार विभागों के सहयोग से संचालित किया गया।

प्रमुख उपलब्धियाँ

- वर्ष 2025 में 16.71 करोड़ से अधिक बच्चों एवं किशोरों को एल्बेन्डाजोल दवा दी गई।
- अगस्त 2025 में 75 में से 67 जिलों ने 75% कवरेज लक्ष्य प्राप्त किया।
- STH की व्यापकता 2015 के 76% से घटकर जुलाई 2025 में 58.2% हुई।
- फरवरी 2025 में 8.97 करोड़ एल्बेन्डाजोल टैबलेट खिलाई गई।
- अगस्त 2025 में 7.74 करोड़ एल्बेन्डाजोल टैबलेट खिलाई गई टैबलेट की आपूर्ति सुनिश्चित की गई।
- कार्यक्रम को LF-MDA अभियान के साथ समन्वित रूप से लागू किया गया।

अगस्त 2025 में राज्य के 75 में से 67 जिलों ने विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा निर्धारित 75 प्रतिशत कवरेज लक्ष्य को प्राप्त किया। वर्ष 2015 में STH की व्यापकता 76 प्रतिशत थी, जो जुलाई 2025 के फॉलो-अप सर्वेक्षण में घटकर 58.2 प्रतिशत दर्ज की गई, यह राज्य की निरंतर प्रगति का संकेत है। इस अभियान के अंतर्गत 1 से 19 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों और किशोरों को कवर किया गया। साथ ही स्कूलों, आंगनवाड़ी केंद्रों और स्कूल से बाहर रहने वाले बच्चों तक भी पहुंच सुनिश्चित की गई।

प्रमुख गतिविधियाँ

इस अभियान के सफल क्रियान्वयन के लिए कई महत्वपूर्ण गतिविधियां आयोजित की गईं, जो इस प्रकार हैं:

- स्वास्थ्य, शिक्षा एवं आईसीडीएस कर्मियों का राज्य, जिला और ब्लॉक स्तर पर प्रशिक्षण।
- फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं (शिक्षक, आंगनवाड़ी कार्यकत्री, आशा) को अभियान संचालन और प्रतिकूल घटना प्रबंधन का प्रशिक्षण।
- निजी विद्यालयों की सहभागिता बढ़ाने के लिए विशेष रणनीति और समन्वय बैठकें एवं माइक्रो-ऑब्जर्वर नियुक्त किए गए।
- सोशल मीडिया, टीवी, रेडियो और समाचार पत्रों के माध्यम से व्यापक प्रचार-प्रसार।
- टेली-कॉलिंग आधारित मॉनिटरिंग, फील्ड मॉनिटरिंग और कवरेज वैलिडेशन।
- 108 एम्बुलेंस सेवा और फार्माकोविजिलेंस प्रणाली को सक्रिय किया गया।
- डिजिटल ट्रैकिंग एवं रिपोर्टिंग प्रणाली का सुदृढ़ीकरण।

मजबूत योजना, बहु-विभागीय समन्वय और प्रभावी निगरानी के साथ उत्तर प्रदेश ने वर्ष 2025 में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस अभियान का सफल क्रियान्वयन किया गया। यह अभियान बच्चों और किशोरों के बेहतर स्वास्थ्य की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

उपेक्षित रोग, साझा जिम्मेदारी : एनटीडी उन्मूलन की दिशा में उत्तर प्रदेश की समन्वित पहल

नेगलेक्टेड ट्रॉपिकल डिजीज (एनटीडी) वे बीमारियाँ हैं, जिनको भले ही "उपेक्षित" कहा जाता है, पर इनका प्रभाव व्यक्ति, परिवार और समाज पर गहरा पड़ता है। इन रोगों का उन्मूलन किसी एक विभाग का कार्य नहीं, बल्कि यह एक दीर्घकालिक और बहु-क्षेत्रीय प्रक्रिया है, जिसमें नीति-निर्माण, मजबूत स्वास्थ्य व्यवस्था, प्रशिक्षित मानव संसाधन, विभिन्न विभागों का समन्वय और समुदाय की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है।

उत्तर प्रदेश सरकार एनटीडी उन्मूलन के लिए योजनाबद्ध और समन्वित रणनीति पर कार्य कर रही है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के 2021-2030 रोडमैप में चिह्नित 20 प्रमुख एनटीडी में से फाइलेरिया, काला - अजार, डेंगू, चिकनगुनिया, कुष्ठ रोग, मिट्टी जनित कृमि संक्रमण, रेबीज और सर्पदंश राज्य के लिए विशेष रूप से प्रासंगिक हैं। ये रोग केवल स्वास्थ्य को ही नहीं, बल्कि शिक्षा, पोषण और आजीविका को भी प्रभावित कर गरीबी के दुष्चक्र को मजबूत करते हैं।

उत्तर प्रदेश सरकार ने रोग-विशेष रणनीतियों के साथ समन्वित कार्यान्वयन मॉडल अपनाया है। फाइलेरिया के लिए एमडीए और वेक्टर नियंत्रण, कालाजार के लिए सघन निगरानी और शीघ्र उपचार, कुष्ठ रोग के लिए मल्टी-ड्रग थेरेपी, डी-वर्मिंग कार्यक्रम, डेंगू नियंत्रण तथा सर्पदंश और रेबीज के लिए निःशुल्क जीवनरक्षक उपचार सुनिश्चित किए जा रहे हैं।

केशकली: आदिवासी अंचल से उठी जन स्वास्थ्य की सशक्त आवाज़

जनपद बांदा के आदिवासी क्षेत्र बघेलाबारी गाँव की स्वास्थ्य सखी केशकली फाइलेरिया उन्मूलन अभियान में परिवर्तन की प्रेरक बनकर उभरी हैं। मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) अभियान के दौरान उन्होंने 197 ऐसे लोगों को दवा सेवन के लिए तैयार किया, जिन्होंने शुरुआत में फाइलेरिया रोधी दवा लेने से मना कर दिया था। यह उपलब्धि उनके सतत संवाद, जागरूकता और विश्वास निर्माण का परिणाम है। केशकली स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) की सक्रिय सदस्य है और बघेलाबारी आयुष्मान आरोग्य मंदिर से जुड़े सीएचओ - पेशेंट स्टेकहोल्डर प्लेटफॉर्म (CHO-PSP) से भी जुड़ी हैं। पीएसपी बैठक में भाग लेने के बाद उन्होंने फाइलेरिया की गंभीरता, इसके दीर्घकालिक प्रभाव और सामूहिक जिम्मेदारी के महत्त्व को गहराई से समझा। केशकली ने सिर्फ 17 दिनों में 15 सामुदायिक बैठकों का आयोजन कर समुदाय में फाइलेरिया दवा सेवन के बारे में फैली भ्रांतियों को दूर किया और महिलाओं को विशेष रूप से जागरूक किया। उनका मानना है कि जब महिलाएँ बीमारी के जोखिम को समझती हैं, तो पूरा परिवार सुरक्षित होता है। इसी विश्वास के साथ केशकली ने टीकाकरण सत्रों, एसएचजी बैठकों, ग्राम सभाओं और नियमित संवाद के माध्यम से फाइलेरिया पर जागरूकता को बढ़ाने के उल्लेखनीय प्रयास किए। जिला कोर ग्रुप (डीसीजी) की सदस्य के रूप में चयनित होने के बाद अब वे अपने ब्लॉक में जागरूकता गतिविधियों का दायरा और व्यापक कर रही हैं। स्वास्थ्य शिक्षा के साथ-साथ वे आदिवासी महिलाओं को स्वरोजगार और आर्थिक सशक्तिकरण से भी जोड़ रही हैं। आज बघेलाबारी में केशकली को केवल एक स्वास्थ्य सखी नहीं, बल्कि जन स्वास्थ्य, नेतृत्व और सामुदायिक सशक्तिकरण की मिसाल के रूप में देखा जाता है।

ट्रांसमिशन असेसमेंट सर्वे (टास)-फाइलेरिया उन्मूलन की वैज्ञानिक कसौटी

फाइलेरिया उन्मूलन अभियान में ट्रांसमिशन असेसमेंट सर्वे (टास) एक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक कसौटी है। किसी क्षेत्र में लगातार पाँच वर्षों तक सफलतापूर्वक मास ड्रग एडमिनिस्ट्रेशन (एमडीए) संचालित होने और कम से कम 65 प्रतिशत पात्र जनसंख्या द्वारा दवा सेवन सुनिश्चित होने के बाद टास आयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य यह आकलन करना है कि माइक्रोफाइलेरिया का संक्रमण स्तर इतना कम हुआ है या नहीं कि उस क्षेत्र में एमडीए को सुरक्षित रूप से बंद किया जा सके।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के दिशा-निर्देशों के अनुसार आमतौर पर अंतिम एमडीए राउंड के 6 से 12 माह बाद टास किया जाता है। इसमें लगभग 5 लाख से अधिक जनसंख्या वाले क्षेत्र में 3150 वयस्कों के रक्त नमूनों की जांच की जाती है। यदि पॉजिटिव मामलों की संख्या 2 प्रतिशत से अधिक होती है तो क्षेत्र "फेल" माना जाता है और एमडीए जारी रहता है; 2 प्रतिशत से कम होने पर क्षेत्र "पास" माना जाता है और संक्रमण नियंत्रित समझा जाता है। टास-1 के बाद टास-2 और टास-3 क्रमशः दो-दो वर्ष के अंतराल पर आयोजित कर निरंतर निगरानी की जाती है। उत्तर प्रदेश में पहली बार टास के अंतर्गत देश में निर्मित क्यू-फैट (फाइलेरियासिस एंटीजन टेस्ट) किट का उपयोग किया जा रहा है, जिससे जांच प्रक्रिया अधिक सुलभ और किफायती बनी है।

बांदा में फाइलेरिया दवा सेवन की प्रेरक पहल

राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन उ.प्र. के एमडीए अभियान का उद्देश्य केवल दवा का सेवन नहीं, बल्कि समुदाय के सहयोग से संक्रमण की श्रृंखला तोड़ना है। बांदा जिले के नरैनी ब्लॉक के पुरनिया ग्राम में कुछ परिवारों ने फाइलेरिया रोधी दवा लेने से इन्कार किया। सूचना मिलते ही डॉ. विजेन्द्र सिंह, मुख्य चिकित्सा अधिकारी स्वयं गाँव पहुँचे, परिवारों से संवाद किया, उनकी शंकाएँ दूर कीं और दवा के महत्व को समझाया। लाभार्थियों की शंकाओं का समाधान हो जाने पर उन्होंने उनके सामने ही दवा का सेवन किया। इस दौरान नरैनी अधीक्षक, जिला मलेरिया अधिकारी, बीसीपीएम, बीपीएम, मलेरिया व फाइलेरिया इंस्पेक्टर, आशा व अन्य स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित रहे। स्वास्थ्य अधिकारियों और टीम की इस पहल से दवा सेवन की सुरक्षा और आवश्यकता के प्रति लोगों में विश्वास बढ़ा तथा फाइलेरिया मुक्त उत्तर प्रदेश के लक्ष्य को आगे बढ़ाने में मदद मिली।

एक फाइलेरिया चैंपियन की प्रेरक कहानी - संघर्ष से नेतृत्व तक का सफर

बाराबंकी के देवा ब्लॉक स्थित आयुष्मान आरोग्य मंदिर, ग्वारी से जुड़े 23 वर्षीय करण यादव पिछले आठ वर्षों से फाइलेरिया के साथ जीवन जी रहे हैं। लगभग 15 वर्ष की आयु में उनके एक पैर में सूजन शुरू हुई, जो धीरे-धीरे दोनों पैरों में फैल गई और बाद में हाइड्रोसील भी हो गया। शुरुआत में परिवार ने स्थानीय झोलाछाप चिकित्सकों से उपचार कराया। अनियमित दवाओं और गलत इलाज के कारण उनकी स्थिति बिगड़ती गई और किडनी संबंधी जटिलताएं भी हुईं, यहां तक कि मूत्र संक्रमण के कारण उनको सर्जरी भी करानी पड़ी। बार-बार बुखार, बढ़ती सूजन और शारीरिक कमजोरी के कारण उनकी पढ़ाई बाधित हो गई और वे खेती में भी सहयोग नहीं कर पा रहे थे। जब करण ने एमडीए अभियान के तहत नियमित रूप से फाइलेरिया रोधी दवा लेना शुरू किया, एमएमडीपी किट के माध्यम से स्वच्छता संबंधी उपाय अपनाए और

नियमित व्यायाम किया। इससे उनकी स्थिति में स्थिरता आई और राहत मिली। आज करण केवल एक मरीज नहीं, बल्कि "फाइलेरिया चैंपियन" है। हेल्प डेस्क मास्टर ट्रेनर के रूप में वे फाइलेरिया से गंभीर रूप से प्रभावित मरीजों को ऑनलाइन दिव्यांग प्रमाणपत्र के लिए आवेदन करने में भी सहायता करते हैं।

एमडीए 2025 अभियान के दौरान उन्होंने विशेष भूमिका निभाई। छह दिवसीय अभियान से पहले और अभियान के दौरान उन्होंने घर-घर संपर्क करके कई लोगों को जागरूक किया और 180 ऐसे लोगों को दवा सेवन के लिए प्रेरित किया, जिन्होंने पहले इन्कार किया था। जहां भी आशा कार्यकत्रियों से इनकार की सूचना मिलती, करण स्वयं वहाँ पहुंचकर लोगों को समझाते। दोनों पैरों में फाइलेरिया से प्रभावित होने के बावजूद, करण ने अपने व्यक्तिगत संघर्ष को सामुदायिक सेवा का माध्यम बना लिया है। इस पर करण कहते हैं, "फाइलेरिया लाइलाज हो सकता है, लेकिन यह रोके जाने योग्य है। मैं नहीं चाहता कि कोई भी व्यक्ति मेरी तरह इस बीमारी से पीड़ित हो।" आज करण यादव अपने क्षेत्र में फाइलेरिया उन्मूलन अभियान का सशक्त चेहरा हैं, जो यह बताता है कि व्यक्तिगत अनुभव भी परिवर्तन की सबसे बड़ी ताकत बन सकता है।